आपके लिए छुट्टियों का एक उपहार

२०१६ का क्रिस्मस उत्सव गुरुमाई चिद्विलासानन्द के साथ

क्रिस्मस ईव यानी क्रिस्मस की पूर्वसन्ध्या, शनिवार, २४ दिसम्बर की सुबह श्री मुक्तानन्द आश्रम में बच्चों की खुशी का ठिकाना नहीं रहा, जब श्रीगुरुमाई आत्मनिधि बिल्डिंग में नीचे की लॉबी में आईं, ठीक वहाँ, जहाँ बच्चे सत्संग में भाग ले रहे थे। वे उसी सुन्दर क्रिस्मस ट्री [क्रिस्मस-वृक्ष] के सामने बैठे हुए थे जिसे उन्होंने पिछले दिन शाम को सजाया था। वहाँ उपस्थित सभी वयस्कों ने क्रिस्मस की प्रफुल्लता व उत्साह के भाव को अनुभव किया जब उनकी परमप्रिय श्रीगुरुमाई और युवा पीढ़ी के सिद्धयोगियों ने अत्यन्त प्रेम और सम्मान के साथ एक-दूसरे का अभिवादन किया।

शुरुआत से अन्त तक यह एक प्रेम का पर्व था, जब बच्चों ने गुरुमाई जी को पेड़ पर लगे आभूषण दिखाए, जब वे एक-साथ लॉबी से अन्नपूर्णा किचन तक गए, और फिर बाल-कुञ्ज गए; बाल-कुञ्ज खेलने की एक बड़ी जगह है, जहाँ कई बच्चे खेल का आनन्द लेते हैं। श्रीगुरुमाई, बच्चे और आस-पास उपस्थित सभी लोगों ने, "काली दुर्गे नमो नमः" का नामसंकीर्तन किया। यह बहुत ही उत्कृष्ट था।

तब श्रीगुरुमाई ने कहा, "एक विचार मन में आया। क्यों न हम अन्नपूर्णा डाइनिंग हॉल में गिविंग वृक्ष के पास 'हरे राम हरे कृष्ण' का नामसंकीर्तन करते हुए, सार्वभौमिक सिद्धयोग संघम् को क्रिस्मस की शुभकामनाएँ दें?"

बच्चों ने तुरन्त उछलकर कहा,"चलिए, करते हैं!"

जब श्रीगुरुमाई, बच्चे और कुछ वयस्कजन नामसंकीर्तन गा रहे थे और गाते जा रहे थे, तो नामसंकीर्तन की ध्वनियों में स्नान करना और क्रिस्मस के निरन्तर बढ़ते उत्साह में होना पूर्णतया दिव्य था।

नामसंकीर्तन के समापन पर, चौदह वर्ष की आयु के दो युवाओं ने, जो सेवा अर्पित करने के लिए ऑस्ट्रेलिया से श्री मुक्तानन्द आश्रम आए थे, गुरुमाई जी से पूछा कि क्या वे अपने गीत उन्हें अर्पित कर सकते हैं। श्रीगुरुमाई ने कहा, "बिलकुल।" उन दोनों ने, "हॅप्पी टुगेदर," "सायलेन्ट नाईट," और

“हैललूय” आदि गीत गाए — और साथ ही एक विशेष गीत भी गाया जिसे उन्होंने केवल गुरुमाई जी के लिए लिखा था, जो कि “फ़ेन्टॅम ऑफ़ द ऑपरा” की धुन पर रचित था।

जब उन्होंने अपने सभी गीत गा लिए, तभी वहाँ रुद्र शार्प जी अपने भोजन की थाली ले ही रहे थे कि उनकी आँखें श्रीगुरुमाई की आँखों से मिलीं। रुद्र शार्प जी, सिद्धयोग चॅन्टिंग टूर : ऑस्ट्रेलिया २०१४ — सत्यम् शिवम् सुन्दरम् के प्रबन्धकों में से एक थे। गुरुमाई जी ने कहा, “रुद्र, क्या आपने उन्हें गाते हुए सुना?”

रुद्र जी जल्द ही उन दो युवाओं के पास आए और उनकी बहुत प्रशंसा की। उन्होंने सभी को बताया कि किस प्रकार चॅन्टिंग टूर के दौरान उन दोनों ने संगीत मण्डली में कितनी अद्‌भुत सेवा अर्पित की थी।

तब गुरुमाई जी ने अपने समीप बैठे बच्चों से पूछा, “रुद्र ने जो अभी बताया उससे तुम सबने क्या सीखा?”

उनमें से एक ने कहा, “यदि हम अभ्यास करते रहें, करते रहें, तो हम अपने लक्ष्य तक पहुँच सकते हैं।”

एक अन्य युवा ने बताया, “मैं भी इसे कर सकता हूँ।”

एक अन्य बच्चे ने कहा, “उनका संगीत अद्‌भुत है।”

अन्त में, उनमें से एक बच्चे ने कहा, “मुझे समझ में आया कि मैं भी चॅन्टिंग टूर में जा सकता हूँ और सेवा अर्पित कर सकता हूँ।”

सब खुशी से चिल्ला पड़े और गुरुमाई जी ने कहा, “तुमने ठीक समझा! मुझे यह सुनकर बहुत खुशी हुई। हाँ! तुम सिद्धयोग संगीत का प्रसार कर सकते हो और इस संसार को खुश कर सकते हो।”

पूरी सुबह सचमुच ही खुशी से भरी क्रिस्मस ईव थी।

इस वीडिओ तथा इन चित्रों व अनुभवों के माध्यम से सभी को श्रीगुरुमाई की क्रिस्मस की शुभकामनाओं का अनुभव हो।

© २०१६ एस.वाय.डी.ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।